समास

'समास' (Compounds) का शाब्दिक अर्थ है- संक्षेप या संक्षिप्त करने की रचना विधि। निम्नलिखित वाक्यों को देखिए-

- राजा का कुमार सख्त बीमार था।
- राजकुमार सख्त बीमार था।

उपर्युक्त वाक्यों में हम देख रहे हैं कि 'राजा का कुमार' का संक्षिप्त रूप 'राजकुमार' हो गया है। अर्थात् दो या अधिक शब्दों का अपने विभक्ति-चिह्नों अथवा अन्य प्रत्ययों को छोड़कर आपस में मिल जाना ही 'समास' कहलाता है।

तात्पर्य यह कि समास में कम-से-कम दो पदों का योग होता है। जब वे दो या अनेक पद एक हो जाते हैं तब समास होता है।

समास होने के पूर्व पदों के रूप को (बिखरे रूप) 'समास-विग्रह' और समास होने के बाद बने संक्षिप्त रूप को 'समस्त पद' या 'सामासिक पद' कहते हैं। ऊपर दिए गए उदाहरणों में 'राजा का कुमार'- समास विग्रह और 'राजकुमार' को हम 'समस्त पद' कहेंगे।

समास के भेद :

हिंदी में समास के मुख्य: छ माने जाते हैं

(1) अव्ययीभाव समास
(2) कर्मधारय समास
(3) द्विगु समास
(4) द्वंद्व समास
(4) तत्पुरुष समास
(4) बहुब्रीहि

उपर्युक्त भेदोंमें से प्रथम चार समासों का अध्ययन इस कक्षा में करेंगे।

(1) अव्ययीभाव समास :

- जिस समास में पहला पद प्रधान हो तथा वह शब्द अव्यय हो और सामासिक शब्द का क्रियाविशेषण के समान उपयोग हो, उसे 'अव्ययीभाव समास' कहते है।
- दूसरे शब्दों में अव्ययीभाव का पूर्वपद अव्यय होता है और उत्तरपद के मिल जाने के बाद भी समस्त पद अव्यय ही रहता है। (क्रियाविशेषण आदि अविकारी शब्द जिनका स्वरूप किसी भी लिंग, वचन या काल में प्रयोग करने पर बदलता नहीं है, वे अव्यय कहलाते है।)
- इन व्याख्याओं के संदर्भ में निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर समझिए।
  - वह यथाशक्ति प्रयत्न करेगा।
  - लड़का प्रतिदिन विद्यालय जाता है।
  - वह आजीवन लोगों की सेवा करता रहा।

समस्त पद	**विग्रह**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन / दिन-दिन
आजीवन	जीवनभर / जीवन-पर्यंत

उदाहरण :

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
यथाविधि	विधि के अनुसार	यथानियम	नियम के अनुसार
यथामति	मति के अनुसार	यथासमय	समय के अनुसार
यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो	यथासंभव	जितना संभव हो सके
यथोचित	जो उचित हो	आजन्म	जन्म से लेकर
आमरण	मरण तक	आकंठ	कंठ तक
प्रतिवर्ष	प्रत्येक वर्ष	प्रतिपल	प्रत्येक पल
दिनोंदिन	दिन ही दिन में	बीचोबीच	बीच ही बीच में
रातोंरात	रात ही रात में	हाथोंहाथ	हाथ ही हाथ में
बेकाम	बिना काम के	प्रत्यक्ष	आँखों के सामने
भरपेट	पेट भर के	बेखटके	बिना खटके के

निम्नलिखित अव्ययीभाव समास का विग्रह कीजिए।

निर्भय	निर्विवाद	अनुरूप	बेरहम
बेफायदा	अनजाने	यथारूचि	प्रत्येक
घड़ी-घड़ी	प्रतिमास	यथार्थ	बेफायदा
अकारण	निर्विकार	अध्यात्म	यावज्जीवन

(2) कर्मधारय समास :

- जिस समास में पूर्वपद 'विशेषण' और उत्तरपद 'विशेष्य' हो या पूर्वपद 'विशेष्य' और उत्तरपद 'विशेषण' हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद में उपमेय-उपमान का संबंध भी हो सकता है।

  उपर्युक्त व्याख्या के संदर्भ में कर्मधारय समास के उदाहरण निर्देशित हैं-

पूर्वपद 'विशेषण' और उत्तरपद 'विशेष्य' हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
महापुरुष	महान पुरुष	अंधकूप	अंधा है जो कूप
पकवान्न	पक्व अन्न	महाविद्यालय	महान है जो विद्यालय
सुहास	सुंदर है जो हँसी	सूक्ष्माणु	सूक्ष्म है जो अणु
सुविचार	अच्छा है जो विचार	महायुद्ध	महान है जो युद्ध
नवांकुर	नव है जो अंकुर	सुलोचना	सुंदर है जिसके लोचन
महावीर	महान है जो वीर	प्रधानाध्यापक	प्रधान है जो अध्यापक
महात्मा	महान है जो आत्मा	नीलगाय	नीली है जो गाय

पूर्वपद 'विशेष्य' और उत्तरपद 'विशेषण' हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	विग्रह
न्यायोचित	न्याय है जो उचित
अधपका	आधा है जो पका

उपमेय - उपमान का संबंध हो ऐसे उदाहरण :

- जिसकी तुलना किसी अन्य से की जाती है उसे उपमेय और जिससे तुलना की जाती है उसे उपमान कहा जाता है। जैसे - चरणकमल समस्त पद का विग्रह होगा चरण रूपी कमल। इसमें चरण उपमेय और कमल उपमान है।

पहला पद उपमेय हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	**विग्रह**
स्त्रीरत्न	स्त्री रूपी रत्न
देहलता	देह रूपी लता
नरसिंह	नर रूपी सिंह
ग्रंथरत्न	ग्रंथ रूपी रत्न
नयनबाण	नयन रूपी बाण

पहला पद उपमान हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	**विग्रह**
राजीवलोचन	राजीव के समान लोचन
प्राणप्रिय	प्राणों के समान प्रिय
भुजदंड	दंड के समान भुजा
मृगलोचन	मृग के समान लोचन
पाषाण-हृदय	पाषाण के समान है जो हृदय
कनकाभ	कनक के समान आभा
कनकलता	कनक के समान लता
कमलनयन	कमल के समान नयन
करकमल	कमल के समान कर

ध्यातव्य : जब पहला पद उपमान हो तो दोनों पदों के बीच में 'के समान' का प्रयोग किया जाता है।

निम्नलिखित समासों का विग्रह कीजिए।

दुरात्मा	क्रोधाग्नि
नीलकमल	चंद्रमुख
नीलांबर	चरणकमल
कापुरुष	मीनाक्षी
नीलकंठ	वज्रांग
नीलगगन	मधुमादन

(3) द्विगु समास :

- जहाँ समस्त पद का पहला शब्द संख्यावाचक अथवा परिमाणवाचक विशेषण होता है, वहाँ द्विगु समास होता है।

उदाहरण :

समस्त पद	**विग्रह**

1. त्रिकाल — त्रि (तीनों) कालों का समूह
2. त्रिफला — त्रि (तीन) फलों का समूह
3. पंचामृत — पंच (पाँच) अमृतों का समूह

– इन उदाहरणों में क्रमांक 1 और 2 में पहला शब्द संख्यावाचक विशेषण है और क्रमांक 3 में पहला शब्द परिमाणवाचक विशेषण है। अत: ये द्विगु समास हैं।

अन्य उदाहरण :

	समस्त पद	**विग्रह**
–	त्रिलोक	त्रि (तीन) लोकों का समूह
–	चौगुनी	चौ (चार) गुनी
–	नवरात्र	नव (नौ) रात्रियों का समूह
–	पंचनद	पाँच नदियों का समूह
–	चतुष्कोण	चार कोण वाला
–	नवग्रह	नव ग्रहों का समूह
–	अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समाहार
–	चौमासा	चार मासों का समाहार
–	चवन्नी	चार आनों का समाहार
–	चौराहा	चार राहों का समाहार
–	सप्ताह	सात दिनों का समाहार
–	त्रिवेणी	तीन वेणियों का समाहार
–	तिरंगा	तीन रंगों का समाहार

निम्नलिखित द्विगु समास का विग्रह कीजिए।

–	नवरत्न	– दोपहर
–	पंचवटी	– अठवाड़ा
–	पंचप्रमाण	– त्रिलोकी
–	त्रिभुवन	– अठन्नी
–	नवरस	– द्विगु
–	दोपहर	– अठलोना
–	छमाही	– अष्टधातु
–	तिकोना	– षड्रस
		– पंचवदन

(4) द्वंद्व समास

– इस समास में समस्त पद के दोनों पद प्रधान होते हैं। समस्त पद का विग्रह करने पर बीच में

समुच्चयबोधक अव्यय 'और' अथवा 'या' शब्द लगाना पड़ता है। इसमें दोनों पदों को मिलाते समय मध्य-स्थित योजक लुप्त हो जाता है। जैसे - 'सत्य' और 'असत्य' का समस्त पद होगा 'सत्यासत्य'। यहाँ दोनों पद प्रधान हैं।

द्वंद्व समास के तीन प्रकार हैं-

(1) इतरेतर द्वंद्व समास :

इस कोटि के समास में समुच्चयबोधक अव्यय 'और' का लोप होता है। जैसे-

	समस्त पद	**विग्रह**
-	ऋषि-मुनि	ऋषि और मुनि
-	माता-पिता	माता और पिता
-	गाय-बैल	गाय और बैल
-	सीता-राम	सीता और राम
-	राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण
-	भाई-बहन	भाई और बहन

(2) वैकल्पिक द्वंद्व समास :

इस समास में विकल्प सूचक समुच्चयबोधक अव्यय 'या', 'वा', 'अथवा' का प्रयोग होता है, जिसका समास करने पर लोप हो जाता है। जैसे-

	समस्त पद	**विग्रह**
-	धर्माधर्म	धर्म या अधर्म
-	छोटा-बड़ा	छोटा या बड़ा
-	थोड़ा-बहुत	थोड़ा या बहुत
-	ठंडा-गरम	ठंडा या गरम
-	हाँ-ना	हाँ या ना
-	लाभालाभ	लाभ या अलाभ
-	जोड़-तोड़	जोड़ना या तोड़ना
-	गुण-दोष	गुण या दोष

(3) समाहार द्वंद्व समास :

जिस समास से उसके पदों के अतिरिक्त उसी तरह का और भी अर्थ सूचित हो, उसे समाहार द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे-

-	दाल-रोटी	दाल, रोटी वगैरह
-	कपड़ा-लता	कपड़ा, लता वगैरह
-	सेठ-साहूकार	सेठ तथा साहूकार आदि धनी लोग
-	रुपया-पैसा	रुपये, पैसे, गहने वगैरह

ध्यातव्य बिन्दु : जब दोनों पद विशेषण हो और उसी अर्थ में आए तब वह द्वंद्व न होकर कर्मधारय हो जाता है। जैसे - भूखा-प्यासा लड़का रो रहा है। यहाँ 'भूखा-प्यासा' लड़के का विशेषण है। अतः कर्मधारय समास के अन्तर्गत आएगा।

निम्नलिखित द्वंद्व समास का विग्रह कीजिए।

- अपना-पराया अमीर-गरीब
- गंगा-यमुना लव-कुश
- स्त्री-पुरुष यश-अपयश
- स्वर्ग-नरक मान-सम्मान
- हानि-लाभ रुपया-पैसा
- कर्तव्याकर्तव्य देश-विदेश
- जीव-जन्तु देवासुर

●